M. T. B. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library

RM No. Ref.
Ser. 318 RM

Title: Siddhanta kaumudi

318

(incomplete)

[illegible]	Title
[illegible]	Author
	Editor
	Year; Vols.
	Publisher
818 [illegible] 751.	Remarks

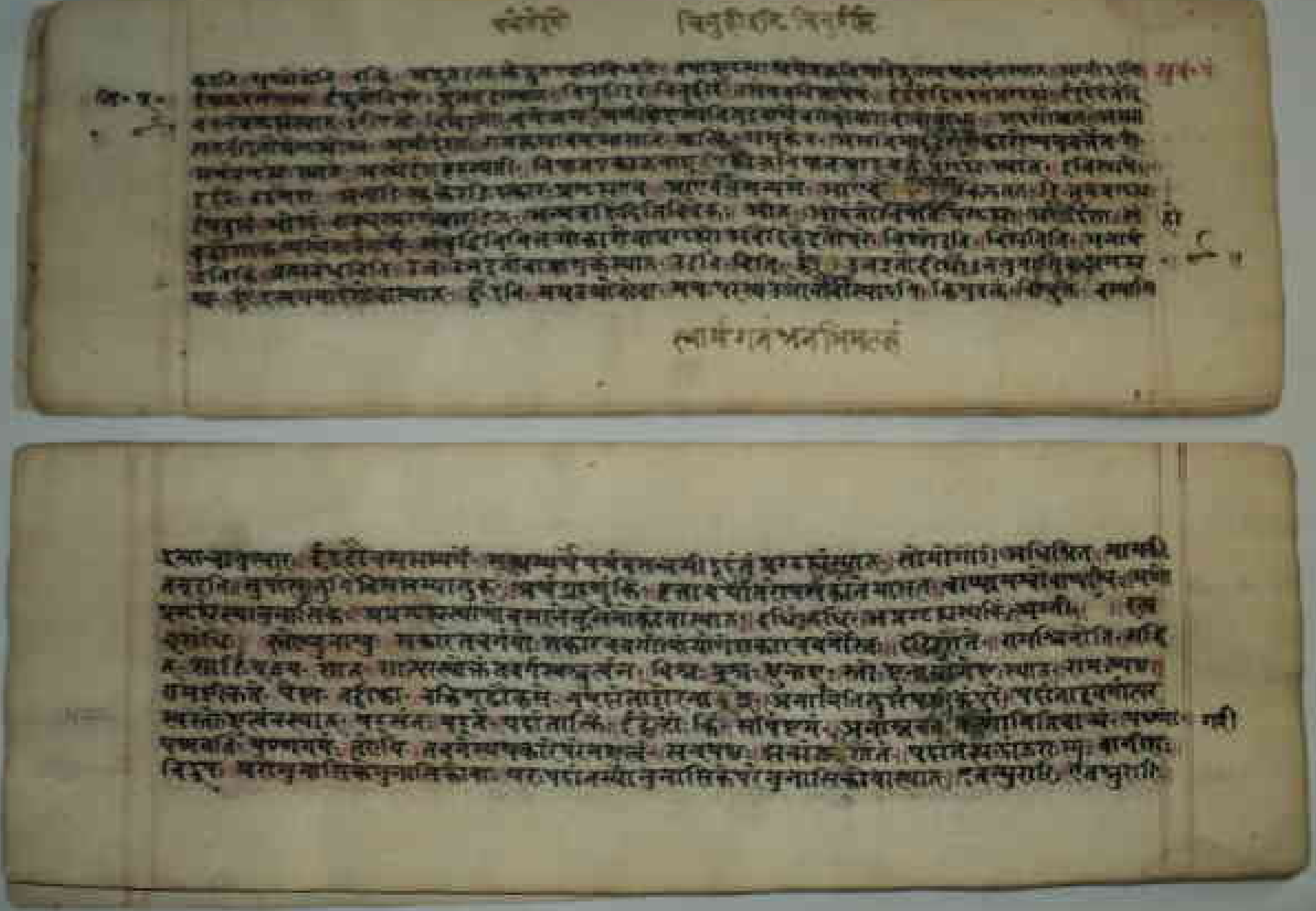

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अतिलिंगः

सु०र०नु०

यद्रूपोतिविनेयव्यंवेदाग्निरात्मर्वपोनिपातः॥ अरूपत्रिवित्रमणवालिविकल्पेन ॥ अथ अपवृक्तः॥ इतिवर्गस्य अनाविकल्पोनिवित्रणोक्ता
किल्प० वृक्तिरोपरविचुक्ता अराज्ञाअस॥ वृक्तिरस्याज्ञप्ताधि॥ अन्तर्नपुंसकविदेः विकल्पविकल्पनामकवृक्तेः॥ अपकल्पाणि॥ अम्ल अदामविचत्रकव
वांविविधवृक्षनद्विनिविविवस्थसनम॥ इवकान्तिविकल्पाणि आमविश्रेष्विवित्रमानवद्वप्रमाद॥ अप्रयोग॥ नु॥ निवा॥ तदावस्था॥ सुपान्त्यं
द्रवृत्यादाणु॥ वृक्ष॥ इस्यमान्तिवत्तकस्वमरूपाद्यानरपात॥ सुपाः॥ सुपाः॥ सुपार्वतिनोमुपाः॥ सुपानरेस्रपातो॥ पाप॥ पाद॥ पाठ
२६॥ वृक्षानि निरातरवाययसप्तादृक्ष्यवरित्यवस्थाः॥ अपप॥ सुपय॥ सुपामङ्गातिनिलादि॥ आदिनिवर्तस्मानिविश्यकपुत्रालिनियम॥ पर
लिमाली॥ अमनिम्नउत्पादिस्ताद॥ कलिपदादिपरस्थानयसव॥ सुपद॥ रिके॥ उपमिनिके॥ सन्ज्ञकाल्प॥ कृत्वा॥ नेवानार्मविदि
आपुका वा सुपध्यानाम्नानेन्न स्मादिमितिरोतेन॥ अमित्वास्थानितलवण सुप॥ नरोनेसंगस्पतोय॥ लर्मनिकाकालवा॥ कृत्वासप
समिके॥ विवस्थाला॥ पापा॥ क्रमागत्स्वस्वाभाणिनानेनो॥ सुमन॥ आलके॥ अलके॥ अप॥ सुप नेकानस्थानतवर्गकारस्यकोप
सर्वांग॥ कीपासोकरनचलेनविशेषपरपुरविम्प्रयोवदानेविशसा॥ अस्त॥ आपा॥ आनन्दादिभिस्थादि॥ समुद्रयसल्लकोः॥ प्रसन्न॥ अमानो॥ २६॥
प्रल्पाती॥ सरकातिलाम्यानसमिकापलस्योगिरलवणव्वतोन॥ अदहनस्य सुदेविसर्पिस्मापणा॥ आगोः॥ सर्वानिस्मादिकम

धंनदीतिनिमित्तेऽत्र अनुस्वारः अनहर्त्तिविधीयते॥ विष्णवे देवनीमोऽत्र यो नामीयमस्येः॥ अनयोः सर्वनामस्थाने॥ स्मादेश स्मात
हमसर्वदेव शेषः॥ अथ इत्यनेन इतिविधिना॥ यस्य अदसो दर्स्य देशः॥ अदसोमात्स्य हस्तस्य दु॥ दुमोऽस्तोदस्यानय
ततुनिधस्यदीर्घस्य समाहारे॥ अतिरतस्मात् सुम अंतरनयो दुं स्तो दिवस्यदर्तो॥ अमुमुपाद॥ अमुम् पदेनौ॥ अमुमुप
ल्वौ॥ अमुमुपल्वं॥ अमुमुपदनौ॥ अमुमुपै॥ अमुमुपैः॥ अमुमुपल्पादिवित्ताद्रि॥ मुलस्यादिमुक्तान्वयम॥ अत
वर्ये समर्दस्य विवित्राधा नान्दिस परस्मैवमुलं दर्ता भवे॥ अदमुमुर॥ अमो॥ सकारस्य स्थानेपरस्य॥ अतिवितिवि
आत्म्यानाम॥ सरसामत्रविप्रपदव्यवस्था नाम्नन्निपटे॥ अप्रमाद॥ उकेन॥ अदसोऽदः स्परकमुम्॥ कैरिविकेतिवित
दा॥ कैरिकेस्मुदाधस्य नस्केरुसर्वदेशायताः॥ विप्रान्देव यो तिके॥ अमुष्याः॥ अनुनोकै॥ विषयपुरु॥ इस अस्पोके॥ विप
अक्रन॥ इत्यतत्राप्रणयात्मक॥ अन्यायनात्त्रप्रयोगतल्पोत विधिपूर्वी॥ अन्ना दस्कारे॥ उद॥ उ॥ उद्नौ॥ उदन्वे॥ उद
दुरुन॥ उदकुश समस्थितुस्वनतकार्युस्थानतीस्थाकारस्य इत्यत्रात॥ उदीत॥ उदीनः॥ उदनभामितारादि॥ समसंकिं समस
पर्वतदर्तिपदे॥ सम्यादु॥ सम्यल्वौ॥ सम्यन्तु॥ तरीच॥ अर्सवाः॥ अपोदे॥ सहस्मसंध्रि॥ सध्यद॥ विरसतिपर्वको॥

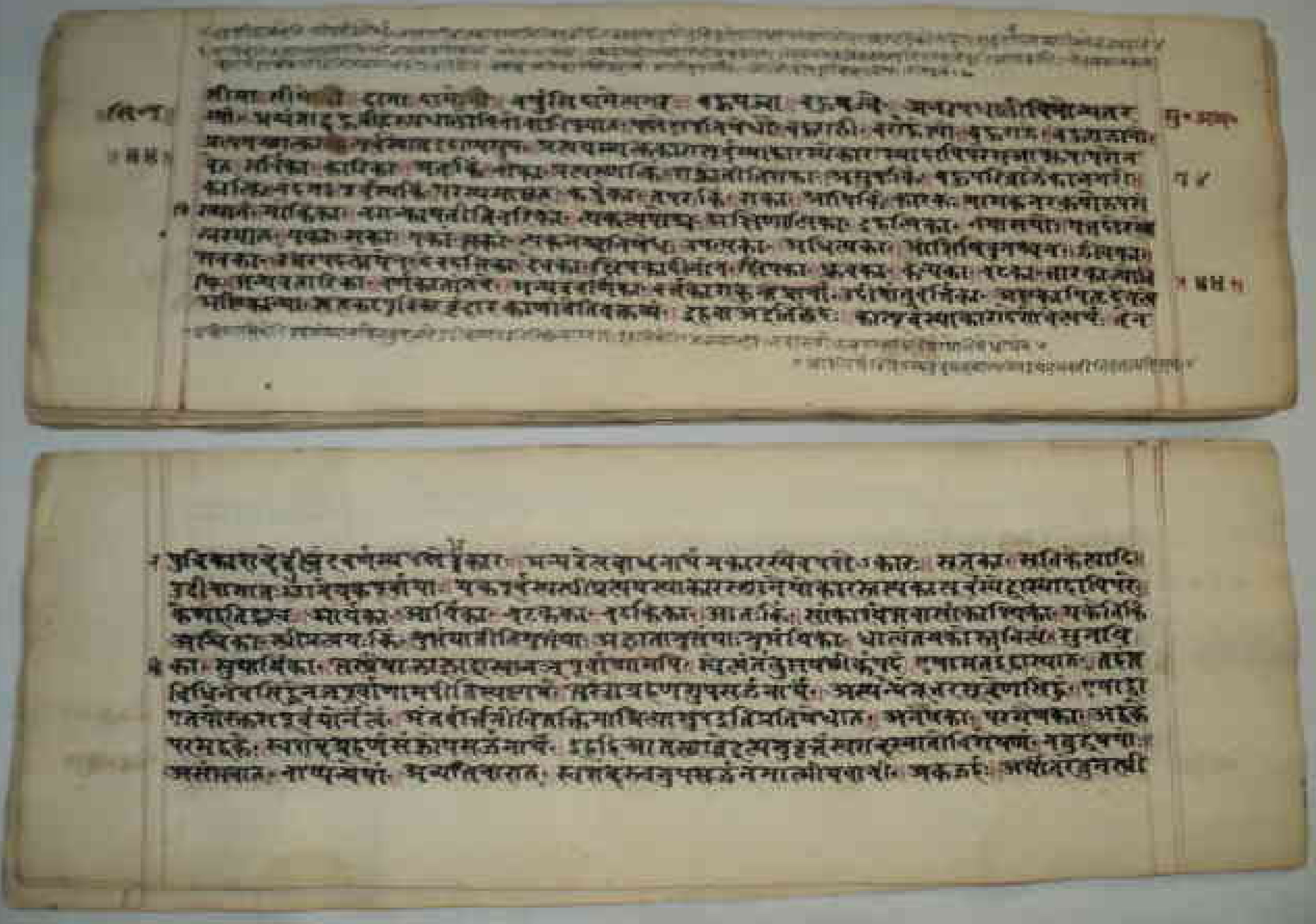

318

॥ कि० ५० ॥ भुपमोक्तकने॥ रजनीरादन्तसुदासाः दुर्वणीतिस्वपरक॥ जनक म्बुः॥ ककुंभाः॥ जनपोदरपीतलोपनो हृष्या जोरोरातवि ॥ श्रीग॥
ताम्बुराजतलमानिलप॥ कुकुः॥ कर्क॥ आणिजात कक्रुक भीकु॥ रञ्जारकरम्॥ हृमु॥ जादूं तालेमीकपी॥ सिद्धपा
॥ ५० ॥ मरु॥ गुडशाकु॥ मंत्रा वार्किः॥ इजवाकु॥ पंभोत्स्य॥ नन्॥ स्पृष्टरणेकारा करत्नोपत्सा॥ वरदु॥ पुंभागल लरण
स्पपृहैवायवार॥ किनालि लिपपालनाया स्मादय॥ स्यतु॥ कुकुनारपवशीपस्प॥ उपमान वाधिनवरसगकल्प
परेद्यत्वालिपादिक तमकुर स्पातः॥ करमाक॥ आदमर्ष्टिकं॥ इनाक॥ स्वी॥ कोदितराफङ्गवाणनबमादेक॥ मदि
वोतक नसपतामनबिन मादेः॥ याति पादिका रुक्लपदाह्निपान कु स्पात॥ अनौ पुष्पार्णकुः॥ कांदितान॥ सेव
गर्भरु॥ नर्फिरनुतेतानि ब मुख्कुहन्नाकुप नागत॥ वसणगशरुचेतायसनु॥ वसणीक॥ वागार॥ सादितरसर्ली
देहिरकक्षा॥ इतिमसमाप्ति॥ कुरम्पा॥ माशाहितारु॥ सहतेइतिमस्पारुरूपपा॥ मासहोक॥ पडुनिप्रमा ॥ ५० ॥
नवनन मस्नलतोदस्पदुर्दितिजवप्रतिपादनातपमान॥ मंजुराथा॥ कदुकपुरल्वे॥ मंजुमापानिषेपुर्हत्व पामद्
कदु॥ कमंदक॥ सहायांकि॥ कदु॥ कुमंदकु॥ भवतेसर्पवसने॥ शार्ईर वधपात्रोक्ति॥ शार्ईर वादरनाकफरत्नर